MAHD-05

June - Examination 2026
M.A. (Final) Examination
हिन्दी साहित्य
नाटक और कथेतर गद्य विधाएँ
Paper : MAHD-05

[*Time: **3** Hours*] [*Maximum Marks: **80***]

निर्देश :– यह प्रश्न–पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड–'अ' **8×2=16**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :– **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

1. (i) 'नाट्यशास्त्र' के रचयिता का नाम बताइए।
   (ii) भारतेन्दु जी द्वारा लिखित तीन नाटकों के नाम लिखिए।
   (iii) प्रसादोत्तर तीन प्रमुख नाटककारों के नाम लिखिए।
   (iv) धर्मवीर भारती जी की दो एकांकियों के नाम लिखिए।
   (v) हरिशंकर परसाई किस धारा के निबंधकार हैं?
   (vi) रेखाचित्र को परिभाषित कीजिए।
   (vii) 'फीचर' और 'डायरी' लेखन में मूलभूत अंतर बताइए।
   (viii) 'आवारा मसीहा' किस महापुरुष की जीवनी है?

खण्ड–'ब' **4×8=32**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :– **किन्हीं चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने प्रत्येक उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

2. चंद्रगुप्त नाटक में प्रसाद जी के कथानक, भाषा–शैली और शिल्प अद्‌भुत हैं। टिप्पणी कीजिए।
3. आधे–अधूरे नाटक के पात्र आधुनिक जीवन–शैली की विसंगतियों का परिचय देते हैं। स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नलिखित गद्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए –

   ''वे रूढ़ियों और कुरीतियों, अंध परंपराओं और मूढ़ विश्वासों के विरोधी थे, धर्म की मूल स्थापनाओं के नहीं। समाज के ही निषेधों के कारण सती न रहने पर भी वे यह नहीं मानते थे कि यह असती नारी नारी भी नहीं रही। यह संकीर्ण भेद–बुद्धि भी उन्होंने त्यागी थी, क्योंकि इसमें मनुष्य धर्म का अपमान होता था। वह मानते थे, जब परिस्थितियों से विवश होकर मनुष्य ऐसा कुछ कर बैठता है जो तत्कालीन धर्म और समाज की दृष्टि में बुरा हो, तो मनुष्य सचमुच बुरा नहीं हो जाता।''

5. निम्नलिखित गद्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए –

''मुझे मानव–जाति की दुर्दम–निर्मम धारा के हजारों वर्ष का रूप साफ दिखाई दे रहा है। मनुष्य की जीवनी–शक्ति बड़ी निर्मम है, वह सभ्यता और संस्कृति के वृथा मोहों को रौंदती चली आ रही है। न जाने कितने धर्माचारों, विश्वासों, उत्सवों और व्रतों को धोती–बहाती यह जीवन–धारा आगे बढ़ी है। संघर्षों से मनुष्य ने नयी शक्ति पायी है। हमारे सामने समाज का आज जो रूप है, वह न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रूप है।''

6. नाटक से आप क्या समझते हैं? नाटक के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

7. निम्नलिखित गद्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए –

''राम तो वन से लौट आए, सीता को लक्ष्मण फिर निर्वासित कर आए, पर लोकमानस में राम की वनयात्रा अभी नहीं रूकी। मुकुट, दुपट्टे और सिंदूर के भीगने की आशंका अभी भी साल रही है। कितनी अयोध्याएं बसीं, उजड़ीं, पर निर्वासित राम की असली राजधानी, जंगल का रास्ता अपने काँटों–कुशों, कंकड़ों–पत्थरों की वैसी ही ताजा चुभन लिए हुए बरकरार है, क्योंकि जिनका आसरा साधारण गँवार आदमी भी लगा सकता है, वे राम तो सदा निर्वासित ही रहेंगे।''

8. ''चीड़ों पर चाँदनी'' यात्रा–वृतान्त के आधार पर निर्मल वर्मा के यात्रावृतान्तों की समीक्षा कीजिए।

9. 'भाभी' महादेवी वर्मा द्वारा लिखित रेखाचित्र है या संस्मरण। सिद्ध कीजिए।

खण्ड–'स' **2×16=32**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :– **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने प्रत्येक उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न **16** अंक का है।

10. हिंदी नाटक के उद्‌भव, परंपरा एवं विकास यात्रा पर एक लेख लिखिए।

11. 'अंधायुग' के पात्र प्रतीकात्मक और मनोवैज्ञानिक रंगत लिए हुए हैं। उपयुक्त कथन को उदाहरण सहित प्रमाणित कीजिए।

12. 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' निबंध का मूल प्रतिपाद्य समझाइए।

13. टिप्पणी कीजिए –

(i) आत्मकथा (ii) संस्मरण
